पंचम अध्याय

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की समस्याएँ

5.1 अंधविश्वास की समस्या

5.2 जातीय भेदाभेद की समस्या

5.3 नारी शोषण की समस्या

5.4 यौन-संबंधों को समस्या

5.5 प्रथा-परंपरा, रीति-रिवाजों की समस्या

5.6 अशिक्षा की समस्या

5.7 भूत-प्रेत, चुड़ैल- डायन संबंधी समस्या

5.8 अंग्रेजों द्वारा शोषण की समस्या

5.9 बहुविवाह की समस्या

5.10 नशापान की समस्या

समन्वित निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की समस्याएँ

सामाजिक मूल्यों ऱ्हास होने पर अनेक सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती है। सामाजिक जीवन में विकास के फलस्वरूप समस्याओं का निर्माण होता है। विकास की धारा प्रवाहित होने के बाद उसमें रूकावट डालने हेतु कई शक्तियाँ कार्यरत बनती है, जिससे समस्या का निर्माण होता है, मानवी जीवन का विकास भी इसके लिए अपवाद नहीं रहता। समस्याएँ मानवी विकास में कठिनाई बनकर आने के बाद भी इसे सुलझाने के साथ-साथ मानवी विकास की गति बढ़ती है। आदिम जनजीवन दूर-दराज पहाड़ी जंगलों में बसा होने के कारण वहाँ यातायात के साधनों का अभाव रहता है, जिससे आदिम लोगों का जीवन समस्याओं से ग्रस्त रहता हैं। भारत सरकार की ओर से इन समस्याओं का सुलझाने का भरकस प्रयत्न किया जा रहा है, इससे आदिम विकास की गति में आ रहा है।

प्राचीन काल स आज तक आदिमों के जीवन में अनेक समस्याएँ रही हैं, इसके पीछे उनका अज्ञान, अंधविश्वास, धार्मिक भावना, नये संस्कारों का अभाव आदि कारण हैं। भारतीय समाज व्यवस्था को पूँजीवादी सामन्तवादी व्यवस्था ने पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण से नयी संस्कृति विचार धाराने झकझोर दिया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय जनजीवन परिवर्तीत तथा प्रभावित हुआ। नयी राजनीति, नया संविधान, उदात्तीकरण की प्रवृत्ति, तकनिकी क्षेत्र में विकास,जंगल कटाई की अमान्यता, विविध सरकारी योजनाएँ आदि से आदिम जनजीवन प्रभावित होने लगा है। उपर्युक्त सभी कारणों से आदिम जनजीवन में उथल-पुथल मच गई है। आदिम लोगों में चेतना प्रवृत्ति का निर्माण होने लगा है। उनमें संघर्ष की भावना बढ़ने लगी है, उनमें सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विघटन दिखाओी दे रहा है। आदिम लोगों का पुलिस माहौल,

सत्ताधारी तथाकथित गाँव का उच्च वर्ग आदि के द्वारा आदिम लोगों का शोषण होता जा रहा है। इसके परिणाम स्वरूप आदिम जनजीवन में अनेक सी समस्याओं का निर्माण हो रहा है। सरकारी विकास योजनाएँ एवं सुधारनीति के कारण उनकी कई समस्याएँ हल हो रही है, फिर भी अनेक समस्याएँ नये रूप में उभरी हुई नजर आती है। अत: स्पष्ट है कि आदिम जनजीवन के यथार्थ सहयोग के बिना उनकी समस्याओं का हल होना मुश्किल है। आदिम जनजीवन के शोषण के विविध आयामों पर सोचते हुए यह स्पष्ट होता है कि आदिम जनजीवन अज्ञान, अशिक्षा आदि के कारण ही उनमें कई समस्याएँ उभर रही हैं। विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में अवस्थी जी ने बस्तर और मंडला क्षेत्र के आदिमों की समस्याओं को चित्रित किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के इस अध्याय में हम इन समस्याओं पर चिंतन करेंगे।

5.1 अंधविश्वास की समस्या :

धर्म के नाम पर समाज में अंधश्रद्धा और अंधविश्वास उत्पन्न हो रहा है। ज्यादातर गाँवों कस्बों, आदिम जनजातियों में अज्ञान के कारण भूत-प्रेत, देव-देवताओं की बलि के कारण मनौतियाँ मनाने की प्रवृत्तियों के कारण अंधविश्वास की समस्या गहराने लगी है। आज वैज्ञानिक उन्नति के पश्चात भी हमारे समाज का बहुत बड़ा अंश विशेषकर आदिम समाज अंधविश्वास से मुक्त हो नहीं हो पाया है। ग्राम्य समाज में व्याप्त इन मान्यताओं के फलस्वरूप ही हमारे बहुत से गाँव प्रगति नहीं कर पा रहें है। इनके पिछड़ेपन के कारण इन्हीं अंधविश्वासों के प्रति विश्वास एवं आस्था का प्रबल भाव है। यहाँ धर्म का वास्तविक सत्य हम भूल गए है, जिससे अंधविश्वास हमारे यहाँ एक गहन समस्या बनती जा रही है, इससे छुटकारा पाये बगैर हमारी उन्नति नहीं हो सकती।

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह 'महुआ आम के जंगल' कहानियों में आदिमों की अंधविश्वास के प्रति श्रद्धाओं को दर्शाया है। इस दृष्टिसे उनकी 'विभाजन', 'महुआ आम के जंगल' तथा 'तीर का तीनका' आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण है। 'विभाजन'

आदिमों आदिमों की अंधविश्वास पर लिखि गयी कहानी है। विवेच्य कहानी में आदिम संस्कृति की मान्यता रही है कि गोंड जाति की युवती बैंगा जाति के युवक के साथ विवाहबद्ध नहीं हो सकती यदि ऐसा किया जायेगा तो उन्हें देवताओं का कोपभाजन होना पड़ेगा। इससे धार्मिक अंधविश्वास स्पष्ट होता है, लेकिन इन अंधविश्वासों के कारण युवा पीढ़ी को आशा आकाक्षाएँ कुंठित हो जाति है। 'विभाजन' कहानी की युवति 'मोटियारी' की यही स्थिती होती है, वह मन अपने प्रेमी बैंगा युवक को और तन होनेवाले पति को समर्पित करने का संकल्प करते हुए कहती है- "ब्याह सीताराम से करूँगी, शरीर पर सीताराम राज करेगा। पर शरीर और मन पर जो असल राज करेगा, वह होगा- लामू।"[1] आदिम समाज में इन अंधविश्वासों के परिणाम स्वरूप वहाँ युवक-युवतियों को मनचाहा साथी चुनने में दिक्कते आती है। प्रस्तुत कहानी में अंधविश्वास तथा सामाजिक दूरावस्था के प्रति अवस्थी जी का आक्रोश स्पष्ट हुआ है।

'महुआ आम के जंगल' कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों द्वारा मनाये जाने वाले 'लारूकाज' जैसे त्यौहार का चित्रण किया है जो अंधविश्वास की धरोहर है। यह त्यौहार आदिम लोग साल में एक बार मनाते हैं। इसके पीछे इनकी कई मान्यताएँ एवं अंधविश्वास काम करता हैं। इस त्यौहार में वे अपने देवता को प्रसन्न करने के लिए सुअर की बलि चढ़ाते हैं। इस त्यौहार के अवसर पर एक गड्ढा खोदकर इसमें गरम पानी डाला जाता है, तत्पश्चात सुअर को गड्ढे में धकेल दिया जाता है। सुअर की दर्दभरी आवाज सुनने के बाद वे मानते है कि नारायण देव की प्रसन्नता पर गाँव विपत्तियों से बचेगा, गाँव में सुख शांति और समृद्धि फैलेगी, भूत-प्रेत की पीड़ा से गाँव को परेशानी नहीं होगी। नारायण देवता की प्रशंसा करते हुए गाँव का गुनियाँ अंग्रेज अफसर को बताते हुए कहता है- "हुजूर, ये बीमारियों का राजा है, सारी बीमारियाँ इसी के कहने से आती हैं। हमारे गाँव में भूत-प्रेत और चुड़ैल भी हमला करते रहते हैं। यह देवता बड़ा तेज है, वह इन बाधाओं से हमें बचाता है।"[2] यहाँ अवस्थी जी ने आदिमों के देवता संबंधी अंधविश्वास की समस्या को स्पष्ट किया है।

'तीर का तिनका' आदिम संस्कृति से जुड़ी कहानी है। आदिमों में दुध लौटाने की एक रूढ़ि है , अगर एक परिवार की लड़की दूसरे परिवार में ब्याही जाती है, तो, उस परिवार का भी यह हक बनता है कि जहाँ लड़की ब्याही गई है उनके परिवार की लड़की से श्यादी करें। इसी रूढ़ि पर बलि चढ़ती है सुगरिन। सुगरिन अमलु नामक घोटुल के सदस्य से प्यार करती है लेकिन दूध लौटाने की रूढ़ि के अनुसार उसका विवाह शिकालगीर से कर दिया जाता है। जिसके कारण जीवन भर उसे पछताना पड़ता है। इस समस्या का मूल कारण उसका पिता है जो शिकालगीर के यहा भाँड़ी में जीता था। "गोंड़ो में एक प्रथा है जब कोई आदमी अपने आदिवासी साहूकार का कर्जा नहीं चुका सकता तो उसके यहाँ कर्ज के बदले नौकरी करने लगती है। इसे भाँड़ी में जीना कहते हैं।"[3] साहूकार से लिया कर्जा न चुका पाने के कारण सुगरिन की शादी वह न चाहते हुए भी शिकालगीर से करा दी जाती है। दूध लौटाना, लमसेना रखना ये प्रथाएँ आदिमों में समस्या का रूप धारण कर रही है। इसके पिछे उनकी सदियों से चली आ रही परंपराएँ है, जो इन समस्याओं को बढ़ावा दे रही हैं। धार्मिक अंधश्रद्धा, देवी-देवताओं पर विश्वास, दरिद्रयता आदि के कारण आदिम समाज अंधविश्वास जैसी समस्या के कटघरे में जकड़ा हुआ यहाँ लक्षित होता है।

5.2 जातीय भेदाभेद की समस्या ः

जातीय भेदाभेद की समस्या भारतीय समाज व्यवस्था का प्रमुख आधार है। भारतीय आदिम समाज भी उसका अपवाद नहीं रही है। आदिमों में जातीय संबंधों को महत्वपूर्ण माना जाता है। जातीय एवं गोत्रगत संबंधो को ये लोग अधिक महत्व देते हैं। भारतीय आदिम समाज परंपराप्रिय होने के कारण रीति-रिवाज व रूढ़ि परंपरा को बहुत महत्व देता हैं। समाज कौन सा भी हो शहरी, ग्रामीण, आदिम पाश्चात्य इन सब में अपनी-अपनी परंपरा प्रिय होती है, समाज में परंपरा का पालन पूरी लगन से लोग करते हैं। ये परंपराएँ ही इनके लिए समस्या का रूप धारणकर लेती है। डॉ.देवेश ठाकूर के मतानुसार - "व्यक्ति समाज जातिगत आधार पर अलग-अलग समूहों में विभाजित और

विछिन्न होकर, परस्पर द्वेष, इर्ष्या और शत्रुता के भाव को बढ़ता हुआ राष्ट्रीय शक्ति, एकता और उदात्त मानवी मन के आदर्शो को धूमिल कर रहा है।"[4]

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की 'चाँद के पीछे चॉदनी के नीचे तथा 'जड़बंधन' कहानियों में आदिमों में प्रचलित जातीय एवं गोत्रगत भेदाभेद की समस्या का सशक्त रूप में चित्रण किया है। ये कहानियाँ आदिमों में जाँति-पाँति, उच्च्य नीच, भेदाभेद आदि को दर्शाती है। आज भी यह समस्या आदिमों में अधिक मात्रा में देखने को मिल रही हैं।

उनकी 'चाँद के पीछे चाँदनी की नीचे' कहानी में अवस्थी ने आदिमों में प्रचलित जातीय भेदाभेद की समस्या तथा उससे उत्पन्न जातीय विद्वेष को दर्शाया है। कहानी की नायिका 'झिरिया' राजमहल में रहनेवाले पंजाबी से प्रेम करती है, प्रेम करते-करते वह उससे ब्याह करने का सपना देखता है। गाँव में झीरिया और पंजाबी के प्रेम की चर्चा होने लगी थी। अपने गाँव की लड़की परजात के लड़के से प्रेम करे यह गाँववाले कभी बर्दाश नहीं कर सकते थे इसलिए सारे गाँव के गोंडों ने टँगियाँ और तीर कमान लेकर पंजाबी के बंगले में आ धमके। पंजाबी सीधा था। उसने अपनी बंदूक भीतर रखकर खाली हाथ बाहर आकर भीड़ को उद्देश्य उसने कहा - "यह रही तुम्हारी बेटी। इसे सम्हालो और मेरी हत्या कर दो।"[5]

झिरिया ने गाँववाले और उसके पिता को खूब समझाया कि मैं इससे प्यार करती हूँ और इसी से शादी करना चाहती हूँ लकिन झिरिया का पिता और गाँववाले यह नहीं चाहते थे। उस दिन झिरिया के पिता ने उसे खूब मारा और उसकी शादी उसके अनचाहे गाँव के किसी एक लड़के से कर दी। जिस दिन ब्याह हुआ उसी रात सामने के पीपल के झाड़ में फन्दा लगाकर झिरिया ने खुदखुशी कर ली। इसप्रकार अवस्थी जी ने आदिमों में प्रचलित जातिभेद की समस्या को अपनी लेखनी के द्वारा सशक्त रूप में दर्शाया है। आज सवर्णो एवं भद्र समाज में यह भेदाभेद अधिक मात्रा में दिखाई दे रहा है। यह समस्या युगबोध युग सत्य की गवाही देती है।

अवस्थी जो की 'जड़बंधन' कहानी भी इसी समस्या को दर्शाती है। कहानी का नायक पदमसिंह और फुलिया एक-दुसरे से प्रेम करते है। फुलिया भी पदमसिंह से प्रेम करती है। लेकिन पदमसिंह के माता-पिता और उसकी जात-पात का पता न होने के कारण गाँववाले उसे अपनी जाति से बहिष्कृत कर देते हैं। इस अवसर पर पदमसिंह उसका पोषण करनेवाले बाबा से कहता है - "नहीं बाबा, यह नहीं हो सकता। जाति-पाँति हमारा तुम्हारा स्वाँग-प्रपंच है। भगवान का नहीं। उसकी निगाह में सब एक हैं। तुमने ही तो यह बताया था कि भगवान समदर्शी है, वह भेदभाव नहीं जानता।"[6] यहाँ लेखक के साम्यवादी एवं मार्क्सवादी विचारधारा के दर्शन होते है।

5.3 नारी शोषण की समस्या :

भारतीय समाज में सदियों से उपेक्षित नारी पुरूष के अत्याचरों से पीड़ित रही है। उसके स्वतंत्र अस्तित्व की किसी ने कल्पना तक नहीं की निर्जीव पदार्थो के समान उसका क्रय-विक्रय होता जा रहा है। वह दुर्बल होने के कारण अत्याचार सहती रही है, समाज में उसका स्थान भोग्यापात्र रहा है। धीरे-धीरे परिस्थिति बदल रही है। समाज अत्यन्त तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। इस बदलते समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है।पुरातन काल से नारी समस्या का प्रमुख कारण प्राय: आर्थिक पराधीनता था। वर्तमान काल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरुष से कन्धा लगाकर नौकरी करती है, उसकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। फिर भी पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था के कारण नारी समस्या जटिल बनती जा रही है।

"हिंदू संस्कृती में पत्नी को अर्द्धांगिनी, गृहस्वामिनी एवं सन्माननीया माना गया है, परन्तु इस युग में उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय है। नारी सेवा करनेवाली मात्र दासी है। उसका अपने घर पर कोई अधिकार नहीं।"[7] इस प्रकार पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी का शोषण हो रहा है।मगर स्वातंत्र्योत्तर काल में नारी को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्तर पर पूरूषों समान अधिकार प्राप्त होने के कारण आज नारी का शोषण कम होता हुआ नजर आ रहा है। अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में

नारी शोषण की समस्या को दर्शाया है, उनकी कहानियों में नारी शोषण के विविध आयाम स्पष्ट हुए है। उन्होंने 'लमसेना', 'जलता सूरज' , 'कमर में बन्द एक गाँठ' आदि कहानियों में नारी शोषण स्थिति को चित्रित किया है।

'लमसेना' कहानी सर्वहारा वर्ग के शोषण को चित्रित करती है। साथ ही साथ इस कहानी में समाज के कठोर बंधनों के कारण नारी शोषण को मिला बढ़ावा स्पष्ट हुआ है। आदिम समाज में पायी जानेवाली रूढियों के मूल में उनके समाज के हित, आड़ंबर, ढोंग, कृषिमता, स्वार्थ आदि पनपने लगते हैं। इन सबका परिणाम बुरा होता जा रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है 'लमसेना' कहानी की नायिका 'फुलिया'। कभी-कभी समाज द्वारा बनाये गये नियम ही उसकी स्वतंत्रता को छीनकर उसके जीवन में दु:ख-दर्द भर देते हैं। इसका सुंदर चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है, लेकिन मंगरू पंचायत को बुलवाकर दूध लौटने की बात पर फुलिया से ब्याह करता है। फुलिया के लाख चाहते हुए भी अपने प्रेमी चैतु से ब्याह नहीं कर सकती यह नारी की विषमता तथा असमर्थता का चित्रण अवस्थी जी ने बड़ी मार्मिकता से स्पष्ट किया है।

'जलता सूरज' कहानी अवस्थी जी के 'सूरज किरण की छाँव' उपन्यास का सार रूप है। इस कहानी में अवस्थी जी ने एक नारी का अपने जीवन में शोषण के विविध आयामों को चित्रित किया है। 'जलता सूरज' कहानी की नायिका बंजारी एक भोली-भाली आदिम युवती है। विलियम एक ख्रिश्चियन युवक उसे बार-बार परेशान करके अपने प्यार के जाल में फँसाकर उसका कौमार्य भंग कर देता है। उसे प्यार के बड़े-बड़े सपने दिखाकर तथा अपने बाप ने गाँव में सुविधाएँ तथा अस्पताल खोलकर गाँव के लोगों पर जो एहसान किये है, इसके बलबुते पर वह यह सब साजिश भरा काम करता है। गाँव में विलियम के पिताजी की इज्जत होने के कारण तथा वे गाँव के सरपंच होने के कारण उनके द्वारा किया गया फैसला गाँव के सारे लोग मनाते हैं। वे फैसला करते है कि, बंजारी का विवाह कंगला या किसी अन्य के साथ किया जाए।

कंगला तो विलियम की इन हरकतों से तंग आकर कब का गाँव छोड़ चूका था। उसे पता चला था कि बंजारी अवैध गर्भवती बन गई है। इसी बीच बंजारी का भूल विवाह जोसेफ नामक एक ख्रिश्चियन युवक से किया जाता है। नारी शोषण की समस्या की करूण कथा को लेखन ने कहानी में चित्रित किया है। बंजारी को जब बेटा होता है तब जोसेफ कहता है - "हरामजादा मराता भी नहीं। पराई थाती सिर का बोझ बनी हुई है। एक पापिन का साथ मिला है। यह मझे भी गड्डे में डालेगा।"[8]

'जलता सूरज' में कई बार यौन वासना से छली गयी आदिम युवती के खत्म होत हुए विश्वास की कथा है। आदिमों के धर्मपरिवर्तन तथा इसाई मशनरियों की सक्रियता पर अवस्थी जी ने चिंता व्यक्त की है। साथ-ही-साथ तथाकथित उच्च वर्ग द्वारा आदिम नारियों के शोषण की समस्या को उजागर किया है, इसका परिपूर्ण चित्रण विवेच्य कहानी में हुआ है। इस कहानी की युवती बंजारी के प्रति लेखक की पूरी सहानुभूती है। बंजारी रूपी सूरज विसंगत समाज व्यवस्था में कैसे जलता रहता है इसे यहाँ प्रतीकात्मकता के साथ स्पष्ट किया है।

'कमर में बन्द एक गाँठ' कहानी में अवस्थी जी ने एक नारी पर होनेवाले अत्याचार को दर्शाया है। इस कहानी की नायिका जयन्ती अपने प्रेमी के लिए डगरपोल ले नहीं सकती। बाजार में खड़ा एक नौजवान युवक जयन्ती को देखता है, वह जयन्ती को पैसे का लालच दिखाकर अपने पास बुलाता है वह जयन्ती को अपनी बाजुओं में पूरी तरह समेट लेता है, जयन्ती द्वारा प्रतिकार करने पर भी कुछ नहीं बन पाया। वह मुँह खोलनेवाली जयन्ती का मुँह अपने गले के डगरपोल से बंद करता है। विवेच्य कहानी में अवस्थी जी ने नारी शोषण की समस्या आत्याचार को उजागर किया है।

लेखक मानना है कि आदिम समाज व्यवस्था में नारी दुर्गा की अपेक्षा अबला रूप में अधिक उभरी जा रही है। अत्याचार, अनाचार की शिकार एवं वासना तृप्ती का साधन बनकर जीवन व्यतित करनेवाली आदिम नारी बेबस, लाचार एवं अपमानित जिंदगी गुजार रही है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं में अटकी

आदिम नारी के जीवन की समस्याओं का चित्रण करने में अवस्थी जी सफल हुए है। खास तौर पर अवस्थी जी आदिम नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठाना चाहते हैं।

5.4 यौन-संबंधों की समस्या :

भारतीय समाज में यौन-संबंधों की स्थापना के लिए विवाह संस्था के अतिरिक्त अन्य मार्गों से भी यौन-संबंध स्थापित करने की स्वतंत्रता रहती है, आदिम समाज भी इसके लिए अपवाद नहीं है। कुछ जातियों में इस संबंधी कठोर नियम भी लक्षित होते है। मनुष्य में 'काम' यह एक आवश्यक प्रवृत्ति है। साहित्य में भी इस प्रवृत्ति को उभारा है। अवस्थी जी ने विवेच्य आंचलिक कहानियों में आदिमों में स्थित यौन-संबंधों की समस्या पर प्रकाश डाला है। विवाह बाह्य, विवाह पूर्व, विवाहेत्तर, विजातीय, अनैतिक आदि रूप में यौन-संबंध आलोच्य कहानियों में दिखाई देते हैं।

रामदरश मिश्र के मतानुसार - "अधिकांश महानगरी कहानियाँ और उपन्यास व्यक्ति के अहेतूक कामलीला को यौन-संबंधो का यथार्थ रूप मान लेते हैं और एक आधुनिक समस्या बनकर पेश करना चाहते है।"[9] आदिमों में स्वच्छन्दता पूर्वक जीवन होने के कारण यौन-संबंध रहे हैं तथा उनके स्वच्छन्दी जीवन में दरिद्रता, अज्ञान का फायदा उठानेवाले व्यक्ति यहाँ लक्षित होते है। विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में नारी पात्र अपनी स्वेच्छापूर्वक यौन-संबंध करती है तो कोई नारी मजबूरन यौन-संबंधों की शिकार बनती नजर आती है। इस संबंध में अवस्थी जी की 'ऊसर खेत', 'सिरदार' तथा 'एक प्यास पहेली' आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं। विवेच्य कहानियों में आदिमों में प्रस्थापित यौन-संबंधो की समस्या को यथार्थ रूप में उजागर किया है।

'ऊसर खेत' कहानी में अवस्थी जी ने स्वेच्छापूर्वक यौन-संबंध प्रस्थापित करनेवाली नारी मुंदरी का चित्रण किया है कहानी की नायिका मुंदरी के विवाह को आठ बरस बीत जाने पर भी उसकी कोख सुनी रहने के कारण अपने पति पिन्ना से बार बार पीटी जाती है। उसे उसका पति सौत लाने की धमकी देता रहता हैं। पति के इस व्यवहार से परेशान मुंदरी अपनी माँ से मिलती है तो माँ कहती है - "मुंदरी, स्त्री का धरम

यही है। यदि वह अपना धरम ही न निभा सकी तो स्त्री कहाँ रही। वैसे तो हर स्त्री रेत का ढेर होती है, पर उस ढेर को सींचकर जगह बनाने में ही जीवन का रस है।"[10] माँ के इस कथन से मुंदरी के मन में माँ बनने की आशाँए उभर उठती है। नारी जीवन की सार्थकता इसी में होती है कि वह माँ बने अन्यथा वह जीवनभर उपेक्षित रहती है। नारी को मातृत्व प्राप्त होने पर ही समाज में मान सम्मान प्रतिष्ठा मिलती है, अन्यथा वह जीवनभर उेपक्षित रहती है। मुंदरी उपेक्षित और लांछित जीवन जीना नहीं चाहती थी। वह अपने पुराने प्रेमी उज्जी को बड़ादेव की मढ़िया के पास मिलने बुलाती है, ओर माँ बनने की इच्छा प्रकट करते हुए उज्जी से अवैध यौन-संबध प्रस्थापित करती है।

सुरेंद्र वर्मा के नाटक 'सूरज की अंतिम किरण से पहली किरण तक' में इसी तथ्य पर प्रकाश डाला है। नपुंसक राजा ओक्काक की पत्नी शिलवती राज्य के लिए उत्तराधिकारी को प्राप्ति करा देने के लिए प्रजा के आग्रह के खातिर वह अपने पूर्व प्रेमी से एक रातभर पुत्र प्राप्ति के हेतु अवैध यौन-संबंध रखती है। मुंदरी की स्थिति यहाँ शिलवती की भाँति यहाँ दिखाई देती है। अपने नारी जीवन की पूर्णत: वह पुत्रप्राप्ति मानती है। इसलिए अपने पूर्व प्रेमी से अवैध यौन-संबंध रखती है।

'सिरदार' कहानी में अवस्थी जी ने अंग्रेजी अफसरों द्वारा आदिम नारियों के साथ अवैध संबंधों की समस्या का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में आदिम नारियाँ किस प्रकार अंग्रजों के अत्याचार एवं वासना तृप्ति का शिकार बनती है, इस तथ्य को लेखक ने उजागर किया है। विवेच्य कहानी में घोटुल में नाच-गाने के बाद अंग्रेजी अफसर घोटुल की सदस्या जालियारों को उठाकर ले जाता है, और उसके साथ अवैध यौन-संबंध प्रस्थापित करके जलियारों को लाल रंग की सुनहरी किनारेवाली लाल साड़ी पहनने देता है। घोटुल के अन्य सदस्य इस बात पर रातभर चर्चा करते है, वे कहते है कि बाहर का आदमी हमारे यहाँ आए और हमारी इज्जत लूटकर चला जाए यह नहीं हो सकता। अपनी इज्जत को महत्व देते हुए एक सदस्य कहता है - "हमें कपड़े नहीं चाहिए, पैसे नहीं चाहिए - हमें अपनी उज्जत चाहिए बाबू जो एक जानवर भी चाहता है

- बाघ के रास्ते से हट जाओ, उसका सामना करने की कोशिश न करो, उसकी इज्जत उसे दो, वह तुम पर भी धावा नहीं बोलेगा - पर, वह गोरा नहीं माना। उसने अपने मन की की। उसने हमारी सोई नसों को उभार दिया। पंचायत ने उस दिन दिनभर चर्चा की। उस दिन गाँव का एक भी आदमी काम पर नहीं गया था।" [11] विवेच्य कहानी अवस्थी में जी ने अंग्रेज अफसरोंद्वारा आदिम नारियों पर होनेवाले अत्याचार, अन्याय, अमानवीय व्यवहार आदि का चित्रण करते हुए अंग्रेजोंद्वारा आदिम नारियों के यौन शोषण की समस्या को उजागर किया है।

'एक प्यास पहेली' कहानी इसी समस्या को उजागर करती है। विवेच्य कहानी में पुन्ना, चन्दिया औए जंतरी प्रमुख पात्र हैं। कहानी का नायक पुन्ना एक कुशल शिकारी है, पुन्ना चालीस बरस का आदमी है, उसके तीन विवाह हो गये थे। इस वक्त चौथा विवाह चन्दिया से हो जाता हैं। चन्दिया बीस बरस की है। पुन्ना कुशल शिकारी होने के कारण अंग्रेज अफसर उसे शिकार पर ले जाते है, और शिकार करने पर उसे इनाम देते है। एक दिन पिन्ना ऐसी शेरनी की शिकार करने जाता है, जिसने आठ आदमी खा डाले है। पुन्ना शेरनी पर टूट पड़ता है, पुन्ना ने शेरनी की गर्दन पकड़ ली और घन्टों की लड़ाई के बाद माहुर भरे तीर को उसके मुँह में घुसेड़कर उसका काम तमाम कर देता है, लेकिन लड़ाई में पुन्ना को अपनी जान गवानी पड़ती है। चन्दिया पुन्ना के इस असमय मौत के कारण दु:ख में रहती है। पुन्ना का बेटा जंतरी उसे हौसला देता है। मन ही मन चन्दिया जंतरी से प्रेम करने लगती है। वह अपनी जिंदगी अकेले ही नहीं काटना चाहती वह जंतरी से कहती है - "मेरा और कौन बैठा है, जंती। क्या ये भयावनी, काटती रातें ही मेरी बाजुओं की छाया बनकर रहेगी? मैंने तुझे कब देखा था, तू भूल गया होगा। तोलपिये डंड़े की तरह तेरा मुस्तैद रूप! काल्हदेव गाँव के किस जवान पर इस तरह आया। तेरी छवि बिरसती नहीं जंती, बिलकुल नहीं। एक गहरा काँटा चुना है और आज भी उसका दर्द मेरे पुरे शरीर को साल रहा है। हाँ, जंतरी......।"[12]

जंतरी ने देखा चन्दिया की बँधी सफेद आँखें मकई के खेत में लालटेन की तरह चमक रही है। कोशिश करने पर भी जंतरी अपनी नजर वहाँ से हटा नहीं सकता। इससे चन्दिया और जंतरी में अवैध यौन-संबंध प्रस्थापित होते है। यहाँ अवस्थी जी ने एक किशोर युवती का अपने पति के पुत्र के साथ अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए यौन-संबंध प्रस्थापित करने की समस्या को दर्शाया है। यहाँ बाह्य शक्तियों का आक्रमण, आर्थिक अभाव, अशिक्षा, अज्ञान आदि कई कारणों से आदिम नारी का जीवन यौन समस्याओं से घिरा हुआ लक्षित होता है।

5.5 प्रथा-परंपरा, रीति-रिवाजों की समस्या :

भारतीय समाज में रीति-रिवाज, रूढ़ि-परंपरा को बहुत महत्त्व दिया जाता है। शहरी, ग्रामीण, आदिम, पाश्चात्य इन सभी समाज में अपने रिती-रिवाज, परंपराएँ होती है। समाज में रहनेवाले लोगों को अपनी परंपरा जाति से भी प्रिय होती है। हर समाज में परंपरा का पालन पूरी लगन से किया जाता है। आदिम समाज के परंपराप्रिय होने के कारण रीति-रिवाज, रूढ़ि-परंपराओं को अधिक महत्त्व देते हैं।

डॉ.लोवी के मतानुसार - "सामान्य रूप से रूढ़िजन्य प्रथा के अलिखित मियम लिखित नियमों की तुलना में कही अधिक स्वेच्छापूर्वक माने जाते है, उनका पालन स्वयंप्रेरित होता है।"[13] यहाँ स्पष्ट होता है कि आदिमों में लिखित नियमों की अपेक्षा अलिखित नियमों का पालन अधिक रूप में दिखाई देता है। अलिखित नियमों के अनुसार परंपरागत चली आ रही प्रथा-परंपराओ, रीति-रिवाजों का पालन करने में आदिम हिचकिचाते नहीं। वे उनका अपने धर्म के अनुसार पालन करते है। विवेच्य कहानी संग्रह में अवस्थी प्रथा परंपराओं से उद्‌भूत समस्याओं को कहानियों में यथा स्थान उजागर किया है।

'लमसेना' कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों की दूध, लौटना, लमसेना रखना इन प्रथा परंपराओं की समस्या को उजागर कर समाज में प्रचलित इन प्रथा परंराओं पर बलि चढ़ती फुलयिा घोटुल के सदस्य चैतू से प्रेम करती है लेकिन मंगरू

उसके घर में रहने तथा काम करने का हरजाना माँगता है। जिससे फुलियाँ और चैतू एक-दूसरे से बिछ़ड जाते है। दूध-लौटाने की प्रथा के अनुसार फुलिया का ब्याह मंगरू से होता है। इससे स्पष्ट होता है कि आदिम समाजद्वारा बनाये गये नियम ही उनकी स्वतंत्रता को छीनकर उनके जीवन में दु:ख दर्द भर देते हैं।

'चाँद के पीछे चाँदनी के नीचे' कहानी में आदिमों प्रचलित प्रथा-परंपराओं, रीति-रिवाजों की समस्या को उजागर करती है। आदिमों में अंर्तजातीय विवाह को मान्यता नहीं दी जाती बल्कि उसका विरोध किया जाता है, आदिमों में आज भी जातीय भेदाभेद की समस्या का रूप देखने को मिलता है। विवेच्य कहानी इन्ही प्रथा-परंपराओं को उजागर करती है। विवेच्य कहानी की नायिका झिरिया एक पंजाबी युवक से प्रेम करती है लेकिन आदिम समाज में अंर्तजातीय विवाह की अमान्यता एवं जातीय बंधनों के कारण वे एक-दुसरे से मिल नहीं पाते। झिरिया के पिता उसकी शादी किसी और लड़के से करा देते है। जिस दिन शादी होती है उसी रात झिरिया पीपल के झाड़ में लटककर खुदखुशी कर देती है। यहाँ स्पष्ट होता है कि आदिम समाज में व्यक्ति की अपेक्षा उनके रीति-रिवाज एवं प्रथा-परंपराओं को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

राजेंद्र अवस्थी जी ने 'महुआ आम के जंगल' कहानी में आदिमोंद्वारा देवताओं के पूजा-पाठ संबंधी रीरि-रिवाजों की समस्या को उजागर किया है। कहानी में आदिमों की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक मान्यताओं को दर्शाया है। विवेच्य कहानी में आदिम लोग गॉव की सुख समृदि्ध के लिए नारायण देव की पूजा करते हैं। पूजा के दौरान देवता को प्रसन्न करने के लिए ये लोग सुअर की बलि चढाते हैं। इसके पीछे उनकी अवधारणा है कि नारायण देव उन्हें आपत्तियों से बचाता है। आदिमों के रीति-रिवाज मान्यताओं के अनुसार इस देवता की पूजा करने से गाँव सुख-शान्ति और समृद्धी बनी रहती है। आदिमों की देवताओं संबंधी रीति-रिवाजों की समस्याओं को अवस्थी जी ने गहराई के साथ उजागर किया है।

उर्पयुक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि अवस्थी जी ने आदिमों के रिति-रिवाज, प्रथा-परंपराओं संबंधी समस्याओं को यथा-तथ्य रूप में उजागर किया है। आदिमों में रीति-रिवाज प्रथा-परंपराओं से उत्पन्न अनेक समस्याएँ उनके जीवन की विकास गति को कुंठित कर रही है।

5.6 अशिक्षा की समस्या :

शिक्षा समाज के निर्माण एवं विकास का अभिन्न अंग होता हैं। शिक्षा सामाजिक सेवाओं के विविध रूपों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्त्व है, जिससे व्यक्तित्व विकास को गति मिलती है। यह समाज के लिए उपयोगी अभ्यास जनित योग्यताओं, मनोवृत्तियों को उत्साहित एवं समृद्ध करने का एक यत्न है। शिक्षा से समाज की अन्य सेवाएँ उभरती है। हर बालकों में संस्कार वृद्धि एवं सुजान नागरिकत्व की वढोत्री के लिए शिक्षा उपयोगी तत्त्व हैं। शिक्षा सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण साधन है। हमारे देश में शिक्षा के विविध स्तर और साधन उपलब्ध है। शिक्षा समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, शिक्षा के कारण ही मनुष्य परिपूर्ण बनता है। भारतीय संस्कृती में प्राचीन काल से सिर्फ पुरुषों को ही शिक्षा ग्रहण करने की अनुमति दी जाती थी, लेकिन वदलते समय के नुसार स्त्री शिक्षा का भी प्रसार हुआ है, और स्त्रियाँ शिक्षित होकर उच्चपद पर जाने योग्य बन गई हैं।

आज भारत सरकार तथा विभिन्न सामाजिक सेवा संस्थाओं द्वारा दूर-दराज पहाड़ों में बसनेवाले आदिम लोगों में शिक्षा प्रसार एवं प्रचार संबंधी विविध योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही है।आज आदिम जनजाति कल्याण विभाग की ओर से आदिमों के बच्चों के लिए प्राथमिक, माध्यमिक स्तर पर आश्रम शालाओं का निर्माण करके शिक्षा संबंधी जागृति की जा रही है।लेकिन अध्यापकों तथा छात्रों के अभाव के कारण प्राथमिक तथा माध्यमिक आश्रम शालाओं में उचित ढंग से कार्यान्वित नहीं हो रही हैं।

“जनसंख्या की अतिशय वृद्धि, सीमित आर्थिक साधन एवं अन्य बहुत कारणों से ग्रामीण समाज में अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है।”[14]

इससे स्पष्ट होता है कि पिछड़े आदिम समाज में शिक्षा की स्थिति अत्यंत भायनक है।

विवेच्य कथा संग्रह की कहानियों में कोई भी आदिम पात्र शिक्षित नहीं है। सभी कहानियों में आदिमों की शिक्षा के प्रति उदानिसनता दिखाई देती है, जिसमें आदिम युवक-युवतियाँ अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। घोटुल के प्रति आदिम युवक-युवतियों की निष्ठापूर्वक भक्ति उद्भूत है। वे इस संस्था से प्रेम करते है। यह घोटुल आदिमों के विश्वास का प्रतीक है। राजेंद्र अवस्थी जी ने विवेच्य कथा संग्रह के माध्यम शिक्षा से संबंधित समस्याओं को विस्तृत धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया हैं। उन्होंने संकेत किया है कि आज भी दूर दराज पहाड़ी वनों में रहनेवाले आदिम लोग शिक्षा से वंचित है। उन्हें भारत निर्माण के लिए विकास की गति में लाकर शिक्षित करना चाहिए। तथा उनके विकास के लिए विविध योजनाएँ कार्यान्वित करनी चाहिए।

5.7 भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन संबंधी समस्या :

आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति और सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव से दूर आदिम मनुष्य का जीवन अज्ञान, भ्रम एवं भय से संचलित रहा है। मानसिक दुर्लबता और अंधश्रद्धा का समन्वित रूप भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन ही है जिस पर आदिम लोगों का आज भी विश्वास रहा है। आदिम लोग बीमारी को दूर करना, संकट से मुक्ति पाना, गाँव की रक्षा करना आदि के लिए भूत-प्रेत का आधार लेते हैं।

कलावती प्रकाश के मतानुसार - "ग्रामीण अंचलों में गरिबी व अज्ञान के कारण डॉक्टर व अंग्रेजी दवाइयों में बहुत कम विश्वास होता है। बड़ी से बड़ी बीमारी का कारण भूत-प्रेत या देवी का प्रकोप समझा जाता है, जिसका इलाज झाड़-फूँक व जंतर मंतर द्वारा होता है।"[15]

अवस्थी जी ने भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन संबंधी समस्या का चित्रण अपनी कहानी 'महुआ आम के जंगल' में उजागर किया है। गाँव की चुड़ैल झिरिया का अफसर में बस जाना, गुनियाँ और ओझा द्वारा मिलकर अफसर की जान बचाने का प्रयत्न करना,

गुनिया मंत्र दुहराते हुए जमीन पर लांदा शराब डालकर दहिने हाथ में पानी लेकर गोरे के मुख पर मारना, गोरे अफसर का आँखें खोलकर बड़बड़ने लगना, गुनियाँ द्वारा हाथ आगे-पीछे खींचकर चुड़ैल से पुछना - "कौन है तू? "इन्हें छोड़, मालिक है गाँव के?" खून पीयेगी, मान ले, नये हैं, मालिक ने अनजाने सब किया है, छोड़।"[16]

अंत में झिरिया गोरे को छोड़ने के लिए तैयार हो गई। इसके बाद नारियल फोड़ा गया। गोरे अफसरने बिस्तर से उठकर, दौड़कर गुनिया को उसने गले लगाया और बकशीस के रूप में 10 रूपये का नोट आगे बढ़ाया, गुनिया ने उसे स्वीकार नहीं किया, और कहा कि हम आपका दिया ही तो खाते हैं।

स्पष्ट है कि भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन संबंधी विचारधारा अशिक्षा, मानसिक दुर्बलता एवं विकृति का प्रतीक होने पर भी आदिम लोग इस पर विश्वास रखते हैं, इसे अपनी विरासत मानकर पूजा भी करते हैं। ये सब उनमें स्थित अंधविश्वास के कारण होता है। भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन आदि का प्रभाव कम करने के लिए आदिम लोग मंत्र-तंत्र का आधार लेते है। राजेंद्र अवस्थी जी ने आदिमों की भूत-प्रेत संबंधी समस्याओं को अपनी कहानी में उजागर किया हैं।

5.8 अंग्रेजों द्वारा शोषण की समस्या :

भारत में व्यापार के बहाने आए अंग्रेज सत्ताधारी बनकर यहाँ के सामंतों और जमीनदारों की सहायता से भारतीय जनता पर अनन्वित आत्याचार करने लगे। इससे आदिम जन भी अछूता नहीं रहा। सामान्य जनता पर आंतक जमाना, अवैध रूप में धन कमाना, आत्याचार करना, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना, शोषितों की आवाज को दबाना, नारियों को जेल में भेजना, उनपर झुठे आरोप लगाकर उनकी अस्मत लुटना आदि शोषण के विविध आयाम अंग्रेजों द्वारा अपनाये जाते थे। अवस्थी जी ने इस शोषण का यथार्थ चित्रण अपनी काहानियों में खींचा है।

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की 'सिरदार' तथा 'महुआ आम के जंगल' कहानियों अंग्रेजों द्वारा शोषण की समस्या को उजागर किया है। 'सिरदार'

कहानी में अवस्थी जी ने आदिमों की कर्तव्य परायणता एवं दृढनिश्चय की कथा इन्टरव्यू शैली में चित्रित की है। लेखक ने आत्मकथात्मक रूप में घोटुल सदस्यों की सम्मान भावना एवं उसी के पद चिन्हों पर चलने की प्रतिज्ञा साधारण पाठक को भी अभिभूत कर देती है। प्रस्तुत काहानियों में अंग्रेजोंद्वारा आत्याचार, नारियों का शोषण, उनकी इज्जत लुटना, उनकी पीटाई करना आदि समस्याओं की ओर अवस्थी जी ने पाठकों का ध्यान खींचा है। विवेच्य कहानी में घोटुल में नाच-गाने के समारोह का आयोजन किया है, जिसे देखने अंग्रेज अफसर आया है। अफसर को नाच-गाने के दौरान घोटुल युवती जलियारों उसे पसंद आती है। वह अफसर जलियारों को उठाकर ले जाता है औंर उसकी इज्जत लुटता है। वापस घोटुल में आकर अन्य सदस्यों से कहता है -"हम रोज तुम्हारी थानागुड़ी में आएगा औंर हर रोज एक-एक पैंकी को ऐसी ही सुंदर साड़ी देगा।"[17] स्पष्ट होता है कि अंग्रेजों द्वारा आदिम नारी का शोषण उनकी समस्या है।

इसी प्रकार 'महुआ आम के जंगल' कहानी में भी अवस्थी जी ने आदिमों के शोषण की समस्या को उजागर किया है। विवेच्य कहानी में आदिम लोग लारूकाज नामक त्यौहार मनाते है। यह त्यौहार देखने को अंग्रेज अफसर भी वहाँ आता है। वहाँ नृत्य करती हुई आदिम युवतियों को बुरी नजरों से देखता है। इस त्यौहार को अंग्रेज अच्छी तरह से समझ नहीं पाता और मुखिया से पूछता है - "क्या बदतमीजी है?" क्या टुकूर-टुकूर देखता है, बदतमीज?"[18] यह कहकर अफसर ने सिपाही के हाथ से कोड़ा छीनकर मुखिया के पीठ में दो-चार जड़ दिये। अचानक घोटुल के मुखिया को पीटने से वहाँ खलबली मच जाती है। अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी में बेवजाह अंग्रेज अफसर किस प्रकार भोले-भाले आदिम जनों पर अन्याय एवं आत्याचार करते है इस समस्या को उजागर किय हैं।

स्पष्ट है कि अवस्थी जी ने विवेच्य कहानियों में अंग्रेजों का अत्याचार, अन्याय, आदिम नारियों की इज्जत की लुटना, पैसे का लालच दिखाकर उन्हें खरीदना

उन पर अमानवीय व्यवहार करना आदि शोषण के कई आयामों को चित्रित किया है। अंग्रेजों द्वारा शोषण के कारण आदिमों का जीवन समस्याओं की गाथा बन गया हैं।

5.9 बहुविवाह की समस्या :

यह समस्या आदिमों में प्राय: विशेष लक्षित होती है। इस समस्या में आदिम पुरुष एक से अधिक स्त्रियों के साथ विवाह करता है। किसी पुरुष का एक पत्नी के जीवित रहने पर भी अन्य स्त्री से विवाह करना बहुविवाह कहा जाता है। प्राचीन काल से भारत में बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन रहा है। बहुपत्नी विवाह सामंतवादी मनोवृत्ति का प्रतीक और नारी शोषण का आयाम रहा है। सामंत ठाकूर, जमींदार अपनी वासना तृप्ति के लिए बहुविवाह करते हैं। बहुविवाह की समस्या के कारण पारिवारिक संघर्ष बढ़ता है और पारिवारिक विघटन, मानसिक असंतोष एवं विफलता का निर्माण होता है। विवाह कानून से स्वीकृत यौन-संबंधों को स्वीकृति देनेवाली संस्था है, मगर बहुविवाह के पश्चात भी यदि पति पत्नी की यौन तृप्ति करने में असमर्थ बनता है, तब अवैध यौन-संबंधो में वृद्धि होती है। ऐसी यौनभ्रष्ट नारी को कलंकित पापीनी, पथभ्रष्ट, शापित माना जाता है। आज कानून से बहुविवाह पर रोक लगाया गया है, मगर अंधविश्वास, अज्ञान, रूढ़िप्रियता, वासनांधता के कारण बहुविवाह की प्रथा कई आदिम जनजातियों में दिखाई दे रही है, जिससे नई समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। आदिम समाज में नारी को श्रम का यंत्र-तंत्र और भोगवासना का केंद्र माना जाता है। परिणामत: बहुविवाह हो रहे हैं। विवेच्य कथासंग्रह की कहानियों में अवस्थी जी ने इस समस्या पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है इस दृष्टि से उनकी 'हिरौंदा' और 'एक प्यास पहेली' कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं।

'हिरौंदा' कहानी में अवस्थी जी ने नारी के आस्थिर जीवन की संवेदना व अंतर्व्यथा को 'हिरौंदा' के माध्यम से चित्रित किया है। कहानी की नायिका हिरौंदा के एक के बाद एक चार विवाह हो जाते है। वह घोटुल के सदस्य जयपू से विवाह करती है लेकिन यह विवाह गाँववाले मान्य नहीं करते। जरपू को कत्ल के इल्जाम में फँसाकर

हिरौंदा का सन्तू से विवाह करा दिया जाता है। नारी को आदिम लोग गाय की तरह मानते है, वह जिस खूँटी से बाँध दी जाती है, उसी से बंध जाती है। एक दिन चौरादादर के मधुवा से हिरौंदा की भेट होती है, वह मधुआ हिरौंदा के घर रात को आकर उसे उठा ले जाता है। मधुवा के साथ वह रहने लगती है दो बच्चे होने के उपरान्त वह मधुवा से तंग आ जाती है। मधुवा शराब के नशें में हिरौंदा के चरित्र पर आरोप लगाकर मारता पीटता है। इसके कारण हिरौंदा संपत नामक आदमी के साथ रहती है। जिसकी पत्नी के दो बच्चे है जिसे हिरौंदा सँभालती है। इस प्रकार उसकी जिंदगी में टूटनशीलता, पती द्वारा आत्याचार, उसके चरित्र पर संशय आदि के कारण वह अपनी जिंदगी को कोसती रहती हैं। एक-के-बाद एक चार पतियों के साथ उसने बीस वर्ष गुजरने के बाद हिरौंदा अपने प्रथम प्रेणी जरपू को देख आश्चर्य मिश्रित विव्हलला से भर जाती है। बार-बार डगमगाती नौंका के समान स्त्री के जीवन की व्यथा तथा बहुविवाह की समस्या को अवस्थी जी ने सशक्त रूप में उजागर किया है।

'एक प्यास पहेली' कहानी में पुरुष के जीवन में एक-के-बाद एक चार स्त्रियाँ आती हैं इसका चित्रण अवस्थी जी ने किया है। कहानी का नायक पुन्ना एक शिकारी है, जंगल के अफसर उसे जंगल का राजा कहते हैं। पुन्ना की अब तक चार पत्नीयाँ हो चुकी हैं। पहली पत्नी दो लड़के पैदा कर किसी नौजवान के साथ भाग गई है, दूसरी पाँच बरस रही एक लड़के को जन्म देकर गायब हो गयी है। किसी सौदागर ने उसे खरीद लिया। तिसरी मिहरिया तो पुन्ना की हत्या करने पर आमदा हुओ, कारण एक सोलाह वर्ष के बैंगा लड़के से उसके अवैध यौन-संबंध स्थापित हुए थे। इस प्रकार तीनों पत्नीयाँ अवैध संबंध स्थापित करके किसी न किसी के साथ भाग गई थी। चन्दिया नामक औरत से पुन्ना ने चौथा विवाह किया। इस प्रकार अवस्थी जी ने आदिमा लोगों में स्थित बहुविवाह की समस्या को उजागर किया है। बहुविवाह की समस्या से अवैध यौन-संबंधों की समस्या जन्म लेती है।

5.10 नशापान की समस्या :

विवेच्य कहानी संग्रह की काहानियों में अवस्थी जी ने आदिमों की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। उनके विवेच्य कहानी संग्रह की काहानियों में वहुतांश आदिम लोग नशापान की समस्याओं के चुंगल में फसे हुए देखने को मिलते हैं। आदिम लोग दरिद्रयता, अप्रगत व्यवसाय, अज्ञान, अंधविश्वास आदि के कारण नशापान के आदती बन चुके हैं। आदिम लोगों के अनुरूप ही सभ्य समाज में भी यह समस्या विकृत रूप धारण किये है। व्यसनाधिनता के कारण आज का युवा वर्ग अपने जीवन पथ से भटककर अन्य मार्गो से जीवन व्यतित कर रहा है। असामायिक मृत्यू यह मनुष्य व्यसनाधिनता के दुष्परिणाम है।

"अंधविश्वास और अज्ञान के कारण व्यसनाधिनता बढ़ रही है, जिसके कारण कई स्वास्थ्य विषयक समस्याएँ पैदा हो गई है।"[19]

अवस्थी जी ने आदिमों की इस समस्या का चित्रण 'हिरौंदा', 'महुआ के आम जंगल' तथा 'बे वात की बात' आदि कहानियों में किया है। घर में एक वक्त की रोजी रोटी खाने को नहीं हैं, लेकिन ये लोग हर रोज शराब पिये बिना नहीं रहते। 'हिरौंदा' कहानी में संपत की मृत्यू होने पर ये लोग संपत को हँसी खुशी दफनाकर चले आते है, और उसकी आत्मा की शांति के लिए महुए और लांदा की शराब पीकर नाचते गाते हैं। इसी तरह 'महुआ आम के जंगल' कहानी में नारायण देव को प्रसन्न करने के लिए ये लोग शराब पीकर नाचते गाते हैं।

'बे बात की बात' कहानी में लेखक ने गाँव के तथाकथित बड़े लोगों पर व्यंग्य किया है। गाँव के लोगों द्वारा कहानी का पात्र 'फागू' नामक गरीब इन्सान पर चोरी का झूठा इल्जाम लगाते हैं, इस सिलसिले में पुलिस उसके घर की तलाशी लेते हुए उसके घर के कोनें में मिट्टी के दो शराब के घड़े देखती है। इसी वक्त फागू सामने आकर सिपाही के पैंरों पर गिरकर गिड़गिड़ाते हुए कहता है - "यही एक पाप किया है

सरकार, खाना भले ही छूट जाय, यही नहीं छूटती। माफी हुजूर।"[20] स्पष्ट है कि फागू शराब की आदत का मारा है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आदिम लोग नशापान के कितने आदती हैं। उनके घर में भूखे, नंगे बच्चों के होने पर उन्हें एक दिन का खाना नसीब न होने पर ये लोग शराब नशापान करने से कभी हिचकिचाते नहीं। दरिद्रयता, अज्ञान, अंधविश्वास परंपरा आदि के कारण ये लोग व्यसनाधीनता के आदि हो गये हैं। नशापान की समस्या के चुंगल से उन्हें निकालना मुश्किल काम है। अवस्थी जी ने आदिमों की इस समस्या की ओर लेखनी उठाकर उनके यथार्थ जनजीवन पर प्रकाश डाला है।

समन्वित निष्कर्ष ः

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों आदिम समाज से संबंधित समस्याओं को बड़ी सूक्ष्मता और बारीकी से अपनी कहानियों के अंतर्गत अंकित किया है। अपनी कहानियों के माध्यम से आदिमों की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांकृतिक पारिवारिक समस्याओं का चित्रण किया है।

विवेच्य कहानी संग्रह में अंधविश्वास की समस्या, जातीय भेदाभेद की समस्या, नारी शोषण की समस्या, यौन-संबंधों की समस्या, अंग्रेजोंद्वारा शोषण की समस्या, बहुविवाह की समस्या, भूत-प्रेत, चुड़ैल-डायन संबंधी समस्या, नशापान की समस्या, अशिक्षा की समस्या आदि समस्याओं को उजागर किया है। अवस्थी जी के विवेच्य कहानी संग्रह की काहानियाँ आँचलिकता प्रधान हैं। उनकी कहानियों में अधिकतर आदिमों की समस्याओं का चित्रण हुआ है। लेखक ने सिर्फ पहाड़ी आंचलिक कहानियों का लेखन ही किया है, ऐसी बात नहीं है, उन्होनें मुम्बई, दिल्ली जैसे महानगरों में रहकर मध्यमवर्गीय जीवन, शहरी समस्या, यांत्रिकता आदि से संबंधित परिवेश का भी लेखन किया है।

अवस्थी जी ने अपनी कहानियों में विवाह से संबंधित समस्या पर चिंतन करते हुए दिखाया है कि एक बंधन में पहाड़ी आदिम नारी का दमन और शोषण अन्य समाज की भाँति आज भी किया जा रहा है। पुरूष प्रधान संस्कृति में सदियों से स्त्री का दमन और शोषण होता आ रहा है। यौन समस्या से पीड़ित नारी का चित्रण लेखक ने 'ऊसर खेत', 'जलता सूरज' आदि कहानियों के माध्यम से करके आदिम नारी यौन समस्याओं से कितनी पीड़ित है, यह दिखाया है। अंधविश्वास की समस्या, भूत-प्रेत, चुडैल-डायन की समस्या, जातीय भेदाभेद आदि समस्याओं का चित्रण करके उन्होंने पहाड़ी आदिम जनजीवन की परंपरागत चली आयी प्रवृत्तियों, रश्म रिवाजों एवं उनकी सामाजिक, धार्मिक धारणाओं पर प्रकाश डाला हैं।

लेखक का जीवन बस्तर जिले के गोंड, बंगा, माड़िया गोंड आदि जनजातियों के बीच व्यतित होने के कारण उन्होंने आदिम समाज जीवन की अपनी पहचान को अनुभूति और संवेदनाओं के साथ वाणी देने का यथार्थ काम किया है, इससे इस कहानी संग्रह में चित्रित आदिम जनजीवन जिंदा दिखाई दे रहा है। किसी पहाड़ी आदिमों के बीच हम प्रत्यक्ष विचरण कर रहे है, इसकी यथार्थ अनुभूति हमें ये कहानियाँ पढ़ते समय होती है।

राजेंद्र अवस्थी ने आदिमों की तकलीफों का, उनके संघर्ष का पूरी तरह प्रामाणिकता के साथ अपनी रचनाओं में उतारने का प्रयास किया है। आदिम समाज की तथा आदिम व्यक्ति की समस्याओं की मानसिक जटिलताओं का चित्रण पूरी गहराई के साथ उन्होंने अपनी आलोच्य कहानियों में किया है। आदिम जनों में आर्थिक विषमता ने अनेक समस्याओं का पहाड़ खड़ा कर दिया है, जिसे छोड़ने की आवश्यकता पर भी उन्होंने बल दिया हैं। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अवस्थी जी ने विवेच्य कहानी संग्रह की सभी कहानियों में आदिमों के जनजीवन से संबंधित सभी समस्याओं को यथार्थ रूप में उजागर करते हुए आज की विकास गति में उनका स्थान कहाँ है, इस पर सोचने को पाठकों को बाध्य किया है। इतना ही नहीं इन पजड़ी आदिम

अंचलों में जनजागृति का काम भी प्रभावी ढंग से किया हैं। भारत में कुल अठराह बड़े-बड़े पहाड़ी भूखंड हैं, उनमें स्थित अनेकविध पहाड़ी जनजातियाँ आज भी विकास गति से परे हैं। उनके यहाँ विकास गति को पहुँचाते हुए अनेक अवरोध उत्पन्न होते जा रहे हैं, इस पर भी सोचने के लिए लेखक ने विवेच्य कहानियों के माध्यम से संकेत दिये हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1987 पृ.क्र.82

2) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.110

3) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.157

4) देवेश ठाकूर - मैंला आंचल की रचना प्रकिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.68

5) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं 1987 पृ.क्र.42

6) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.100

7) घनश्याम भुतड़ा - समकालीन कहानियों में नारी के विविध रूप, अतुल प्रकाशन, कानपुर प्र.स. 1993 पृ.क्र. 43

8) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.126

9) रामदरश मिश्र हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष, गीरनार प्रकाशन, पीलनीगंग, प्र.सं.1984 पृ.क्र.90

10) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.35

11) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.65

12) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.154

13) कैलाशकुमार राय - वन्य समाज में अपराध और प्रथा,मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल, सं.1971 पृ.क्र.10

14) विमल शंकर नागर - हिंदी के आंचलिक उपन्यास सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ, प्रेरणा प्रकाशन, मुरादाबाद. प्र.सं.2000 पृ.क्र.32

15) कलावती प्रकाश - हिंदी के आंचलिक उपन्यासों का लोकतात्त्विक अध्ययन, ज्ञानपुर्णा प्रकाशन, जयपुर. प्र.सं.1990 पृ.क्र.47

16) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.118

17) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.64

18) राजेंद्र अवस्थी - वही पृ.क्र.109

19) संपा.विलास संगवे - भारतातील सामाजिक समस्या, पॉप्युलर प्रकाशन, मुम्बई, प्र.सं.1987 पृ.क्र.112

20) राजेंद्र अवस्थी - महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987 पृ.क्र.92